षष्ठम् अध्याय

संक्षेपिका

षष्ठम अध्याय

संक्षेपिका

शोध परिचय

शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो समाज का निर्माण कर सके। मानवीय समाज का निर्माण करना शिक्षा द्वारा ही सम्भव है। जिसमें एक साथ दूसरे पर भरोसा कर सके। कमजोरों को बलवान का डर न हो, गरीब अमीर की ठोकर से बचा रहे, जिसमें एक संस्कृती दूसरी संस्कृति के साथ-साथ भली भांति फल-फूल सके और हर एक की विशेषता प्रकाशित हो, जहाँ हरके महान बन सके जिसमें बनने की क्षमता हो, और वह महान बनकर अपनी सारी शक्ति को समाज सेवा में लगा दें।

आज भारत में नहीं वरन् पूरे विश्व में इस विषय पर दुःख और चिन्ता प्रकट की जा रही है कि लोगों के तथा विशेष रूप से नई पीढ़ी के जीवनमूल्यों का हास होता जा रहा है, बढ़ती हुई अनुशासनहीनता भ्रष्टाचार, अपराध तथा अनैतिकता जीवनमूल्यों के हास के साक्षी है। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि हम अपनी शिक्षा प्रणाली को उचित रूप में मूलोन्मुख करे। इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि शिक्षा के सभी स्तरों पर विर्धार्थियों के मन में उचित मूल्यों को बैठाने की ओर ध्यान दिया जाए ताकि देश के भावि मार्ग प्रशस्त हो। आज के बालक कल के नागरिक है। अतः हमें जिस प्रकार का भारत बनाना है उसकी शुरूआत विधालयों से होगी। शिक्षा आयोग का यह कथन है कि भारत के भाग्य का निर्माण उसके विधालयों में हो रहा है। बिल्कुल सत्य है।

प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम हो, या सभ्य, सरल हो, या जटिल, मूल्यों का बहुत महत्व होता है। मूल्य समूह एवं समाज का आधार कहे जाते हैं। बिना मूल्यों सदगुणों एवं आदर्शो के निमार्ण व पुनिर्माण के समाज का अस्तित्व संभव नही है। जीवनमूल्य एक प्रकार के स्थायी विश्वास होते हैं।

इसलिए प्रारंभ में एक बार जिन मूल्यों का बीज बालक में बो दिया जाता है उसमें परिवर्तन करना असंभव नही है परन्तु कठिन जरूर हो जाता है। इस व्यस्त समाज में जब कि शिक्षा का समस्त दायित्व विधालयों पर आ गया है तो जीवनमूल्यों के विकास की और ध्यान देना भी विधालयों का महत्वपूर्ण कार्य हो गया है। विधालयों के पाठ्यक्रम में प्राथमिक स्तर से ही मानवीय मूल्यों के विकास हेतु प्रयास किये जाने चाहिए। इस दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों पर बालकों का निमार्ण करने का महान उत्तरदायित्व है। उनका प्रमुखकार्य यह होना चाहिए कि विधालय का समस्त वातावरण इस प्रकार बनाए कि बच्चों में उचित मूल्यों का संचार हो।

अध्ययन की आवश्यकता :-

देश की प्रगति उस देश की शिक्षा पर आधारित होती है। परिवर्तनशील युग में भौतिकता के बहते प्रवाह के कारण जनमानस की शोच में बदलाव के साथ-साथ व्यक्तित्व निर्माण के मानदण्ड भी बदल गये है। भौतिक संसाधनों द्वारा सूचना एवं तकनीकी का ज्ञान ही उनके जीवन का अपेक्षित उद्देश्य बन गया है। सामान्यतः उनकी दृष्टि में यह समय की मांग और आवश्यकता है। बालक के चारित्रिक विकास की ओर उनका ध्यान नहीं हो जो कि व्यक्तित्व निर्माण की प्रमुख आधारशिला है । जैसा कि महात्मा गांधी ने कहा था कि ज्ञान चरित्र के बिना मूल्यहीन है। चारित्रिक विकास के बिना बालक गलत व सही में भेद नहीं कर पाते है। यही कारण है कि उनमे जीवनपर्यन्त सही निर्णय लेने की क्षमता का विकास नहीं हो पाता।

आज बालकों का बात बात में झूठ बोलना, अनावश्यक बात पर बहस करना, या तर्कहीन बातें करना, गलत चीजों का सेवन करना तथा जहां चाहे थूक देना, गंदगी फैलाना, आक्रमक व्यवहार, अफवायें फैलाना व चुगली करना आदि मानसिक गंदगी उनके बाह्य व्यवहार में देखने को मिलती है।

किसी भी बालक के व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया में जीवनमूल्यों का प्रमुख स्थान है। हमारे जीवमूल्य किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब है।

इन्ही के द्वारा हमें व्यक्ति के व्यक्तित्व की चारित्रिक विशेषताओं और उसके चिन्तन का पता लगता है। यही चारित्रिक विशेषताएँ और चिन्तन उसकी मनोशारीरिक क्रियाओं की अभिव्यक्ति करते है, जिनमें विभिन्न रूपों प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष में व्यक्ति में अन्तर्निहित मूल्य प्रदर्शित होते है। बच्चों को आत्मजन से वात्सल्यरूपी सुखद स्पर्श का आभास होता है। यहीं से वह मानवीय प्रेम की प्रथम अनुभूति करता है। जब वो विभिन्न रूपों से वात्सल्य व स्नेह को प्राप्त करता है तो उसमें भी इसी गुण का प्रादुर्भाव होने लगता है और शनैः शनैः उसके जीवन में शाश्वत मूल्य के रूप में पल्लवित होने लगता है।

बच्चों में मूल्यों का विकास उनके व्यक्तित्व अनुभवों एवं व्यक्तिगत रूचियों के अनुसार होता है। किताबी ज्ञान के द्वारा व्यवहार में मूल्यों को उतारा जा सकता है दूसरे शब्दों में यदि कहे तेा मूल्यों को पढ़ाया नहीं जा सकता बल्कि यह जीवन में आत्मसात् करने, उन्हे अनुभव करने तथा बोध करने की क्रिया है। अपने जीवन के प्रारम्भिक काल में बालक विभिन्न क्रियाओं तथा अर्जित संस्कारों के माध्यम से विभिन्न जीवनमूल्यों को आत्मसात् करता है। तथा इसके साथ ही जीवन में घटित हेाने वाली विषमताओं का बोध करता है जो उसमें आत्मसंयम के साथ-साथ सही जीवन जीने की प्रेरणा देती है।

आज आवश्यकता है एक स्वस्थ एवं संस्कारमय ऐसे वातावरण की जहाँ पर भावनात्मक सुरक्षा के साथ-साथ बालक के मन में उठनेवाली गहन शंकाओं का समाधान क़िया जा सके। इस दिशा में शिक्षक की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। उन्हे अपने बच्चों की आवश्यकताओं को समझने के साथ-साथ एक आदर्श शिक्षक बनकर उन्हे सही जीवन जीने की कला भी सिखानी होगी तभी उनका भविष्य उज्वल बनेगा।

इस अध्ययन की आवश्यकता को अनुसंधानकर्ता ने इसलिए चुना है कि स्वाध्याय कार्य से बच्चों में व्यक्तित्व विकास कितना हुआ है। समायोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है तथा शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है उसकी जाँच करने के लिए इस विषय को चुना गया है।

समस्या कथन :–

"स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा सात के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों, शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर प्रभाव–एक अध्ययन।"

अध्ययन के उद्देश्य :–

- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा सात के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा सात के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा सात के बच्चों के समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले कक्षा सात के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों के अध्ययन में सार्थक अन्तर नहीं है।
- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले कक्षा सात के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।
- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले कक्षा सात के बच्चों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की सीमाएँ :-

- शोध में गुजरात राज्य के बड़ौदा जिले के सावली तहसील को लिया गया है।
- शोध में सावली तहसील की 239 प्रारंभिक विद्यालयों में से 10 विद्यालयों को शामिल किया गया है।
- शोध कार्य में स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का कक्षा 'सात' के बच्चों के व्यक्तित्व कारकों, शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन पर प्रभाव को ही शामिल किया गया है।

न्यादर्श चयन :-

शोधकर्ता द्वारा अपने शोधकार्य में सोद्देश्य (ऐच्छिक) पद्धति से गुजरात राज्य के बड़ौदा जिले के सावली तहसील की 239 प्रारम्भिक विद्यालयों में से 10 प्रारंभिक विद्यालयों के 200 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। एक विद्यालय में से 20 विद्यार्थियों को लिया गया है, जिसमे में 10 विद्यार्थियों स्वाध्यायकार्य वाले एवं 10 विद्यार्थियों बिन स्वाध्यायकार्य वाले है। जिसका प्रदत्त निम्न सारणी में है।

क्र.	स्कूल	स्वाध्यायी विद्यार्थी	बिन स्वाध्यायी विद्यार्थी	कुल विद्यार्थी
1.	सांठासाल	10	10	20
2.	छालीयेर	10	10	20
3.	राजुपूरा	10	10	20
4.	शिहोरा	10	10	20
5.	वरसड़ा	10	10	20

6.	मेवली	10	10	20
7.	सावली	10	10	20
8.	परथमपुरा	10	10	20
9.	डेसर	10	10	20
10.	सावली (जय हिन्द)	10	10	20
	योग	**100**	**100**	**200**

शोध में प्रयुक्त चर :-

अनुसंधान प्रक्रम में परिकल्पना की रचना के पश्चात् संबंधित घटना के कारकों के अनुभाविक अध्ययन की आवश्यकता होती है। इसके लिये घटनायें संबंधित पूर्वगामी कारकों के स्वरूप को स्पष्ट समझना होता है। इनके अतिरिक्त सामाजिक विज्ञानों से संबंधित घटना को प्रभावित करने वाले मुख्य बाह्य कारकों को भी जानना वैज्ञानिक अध्ययन के लिये नितान्त महत्वपूर्ण होता है। संप्रत्ययात्मक स्पष्टता तथा मात्रात्मक विशुद्धता के आधार पर वैज्ञानिक अनुसंधान में ऐसे कारकों को ही चर की संज्ञा दी जाती है।

- **स्वतंत्र चर** –स्वाध्याय कार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति)
- **आश्रित चर–** शैक्षिक उपलब्धि

  व्यक्तित्व कारकों

  समायोजन

शोध में प्रयुक्त उपकरण :-

किसी भी शोध कार्य में उपकरणों का बहुत महत्व होता है। क्योंकि इन उपकरणों के माध्यम से ही आवश्यक आंकड़े एकत्रित किये जाते है। उपकरणों

का चयन एवं उपयोग बड़ी सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। जिसमें परिणाम की विश्वसनीयता पर सन्देह न किया जा सके।

प्रस्तुत शोध कार्य में उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए आंकड़ों का संग्रह करने के लिये निम्नलिखित उपकरण का उपयोग किया गया है।

बालक व्यक्तित्व मापन प्रश्नावली :-

व्यक्तित्व मापन प्रश्नावली का निर्माण एस.डी. कपूर एवं शारदाम्बा राव ने किया है। इस प्रश्नावली के फार्म 'A' और 'B' का उपयोग किया है। फार्म 'A' के दो भाग A1 और A2 में कुल मिलाकर 70+70 = 140 प्रश्न है। उसी तरह फार्म 'B' के दो भाग B1 और B2 में कुल मिलाकर 70+70=140 प्रश्न है। इस प्रश्नावली में जो प्रश्न है उसके जवाब से बच्चों में व्यक्तित्व कारकों का विकास कितना हुआ है उसका मापन किया जाता है। व्यक्तित्व कारक 14 है।

किशोर बालक/बालिका समायोजन मापनी :-

शोधकर्ता ने अपने शोधकार्य में बच्चों के समायोजन मापन के लिये इस मापनी का उपयोग किया है। श्रीमती रागिनी दुबे ने इसका निर्माण किया है किशोर बालक समायोजन मापनी में कुल मिलाकर 80 विधान दिये गये है। उस विधानों के सामने 'हाँ' और 'नहीं' दो विकल्प दिये गये है उसमें से सहमत विधान के समाने (✓) का निशान करना है और असहमत के सामने (✓) का निशान करना है। इस मापनी में स्व. समायोजन के 40 एवं समूह समायोजन के 40 विधान है इस मापनी को पूर्ण करने के लिये कोई समय मर्यादा नहीं है।

शैक्षिक उपलब्धि :-

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की जानकारी प्राप्त करने हेतु कक्षा 6वीं के वार्षिक परीक्षा के अंकसूची से प्रतिशत अंकों को लिया गया है।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

प्रदत्तों का संकलन :-

प्रस्तुत शोध हेतु प्रदत्तों का संकलन माह जनवरी 2005 में गुजरात के बड़ौदा जिले के सावली तहसील के 10 विद्यार्थियों में जाकर एक सप्ताह में किया गया। प्रदत्त संकलन के लिये शोधकर्ता ने संस्थान के प्रमुख प्राचार्य से अनुमति ली। उसके बाद अध्ययनकर्ता ने संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों को वर्गखण्ड में जाकर 10 स्वाध्यायकार्य वाले एवं 10 बिन स्वाध्यायकार्य वाले बच्चों को अलग बिठाकर बालक व्यक्तित्व मापन प्रश्नावली 'A' और उसकी उत्तर पत्रिका दी और उसमें आवश्यक जानकारी भरने के निर्देश दिये गये। उसको भरने के लिये '1' घण्टे का समय दिया गया। उसी तरह फार्म 'B' को भी दिया गया। और समय के अनुसार सभी बच्चों ने उत्तर पुस्तिका पूर्ण कर ली और बच्चों से उत्तरपुस्तिका को वापस ले लिया गया। उसी तरह बालक/बालिका समायोजन मापनी वितरित की। जिसमें आवश्यक जानकारी भरने के लिये विद्यार्थियों को निर्देश दिये गये। और इसके लिये 30 मिनिट का समय दिया गया। जब विद्यार्थियों ने मापनी पूर्ण कर ली तब उससे वापस ले लिया गया। शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़ों को प्राप्त करने के लिये शोधकर्ता ने संस्थान के कर्मचारी से बात करके उसके द्वारा रजिस्टर में से कक्षा 6वीं के बच्चों के वार्षिक परिणाम को लिया गया। क्योंकि कक्षा छठवीं में सभी के लिए समान परीक्षा होती है जो डाईट द्वारा ली जाती है। इस प्रकार अध्ययन से संबंधित प्रदत्त संकलन किया गया।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :-

शोध समस्या से संबंधित संकलित प्रदत्तों के सारणीयन करने के उपरान्त उनसे उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने उचित परिणाम प्राप्त करने के लिये, दो समूह के मध्य अन्तर की सार्थकता 'टी' परीक्षण माध्यम से ज्ञात किया गया है।

निष्कर्ष :-

स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले कक्षा सात के बच्चो के व्यकित्व कारको, शैक्षिक उपलब्धि तथा समायोजन का अध्ययन किया गया। इसमें निम्न प्रकार निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

- व्यकितत्व कारक 'ए' (गाम्भीर्य/बेधडक) में स्वाध्यायकार्य वाले एव बिन स्वाध्यायकार्य वाले विद्यार्थियों में सार्थक अन्तर पाया गया है। स्वाध्यायकार्य वाले विद्यार्थियों में 'गाम्भीर्य गुण' का ज्यादा प्रभुत्व पाया गया है और बिन स्वाध्यायकार्य वाले विद्यार्थियों में इस गुण का प्रभाव कम है।

- व्यक्तित्व कारक 'बी' (बौद्धिक हिनता/बौद्धिक उच्चत्व) 'सी' (संवेगात्मक अस्थिरता/संवेगात्मक स्थिरता) 'डी' (भावशून्य/उत्तेजित) ई (विनम्र/उत्साही) 'एफ' (संयमी/आवेगपूर्ण) ''जी'' (निजहित साधक /कर्तव्यनिष्ठ) 'एच' (संकोची/साहसी) 'आई' (दृढ़ता/संवेदनशील) 'जे' (उत्साही/सतर्क) 'एन' (निष्कपट/समझदार) 'ओ' (शांतप्रिय/आशंकायुक्त) 'क्यू-3' (असंयमित/संयमित) 'क्यू-4' (आनन्दमय /तनावपूर्ण) में सार्थक अन्तर पाया नहीं गया। दोनों समुह के विद्यार्थियों ने समान अंक प्राप्त किये। इसलिये दोनों समुह में समानता पायी गई है।

- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः स्पष्ट होता है की स्वाध्यायकार्य का बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पाया गया ।

- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) एवं बिन स्वाध्यायकार्य (बिन आध्यात्मिक प्रवृत्ति) वाले विद्यार्थियों के समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया। इससे स्पष्ट होता है की स्वाध्यायकार्य का बच्चों के समायोजन पर प्रभाव पाया गया।

सुझाव

- विद्यालय में विद्यार्थियों को स्वाध्यायकार्य की बालसंस्कार प्रवृत्ति से अवगत करना चाहिए। ताकि इस प्रवृत्ति के बारे में ज्ञान प्राप्त करे, और उसको समझ सके ।
- विद्यालय में स्वाध्यायकार्य के विचारों से विद्यार्थियों को अवगत करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों में विचारशक्ति का विकास हो सके, और उन्नत जीवन दृष्टिकोण के बारे में सोच सकें।
- विद्यार्थियों को ऐसी प्रवृत्ति द्वारा शिक्षा देनी चाहिए ताकि उसमें नैतिकता, मूल्य, संस्कृति सर्वधन, संरक्षण आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सके।
- विद्यालयों में ऐसी प्रवृत्ति को अभ्यास के साथ विद्यार्थियों को करवानी चाहिए। ताकि उसका सर्वागीण विकास हो सके ।
- स्वाध्यायकार्य बालसंस्कार केन्द्र में जो महान चरित्रों की कहानिया सुनाई जाती है, उसको विद्यालयों में विद्यार्थियों को सुनानी चाहिये।
- विद्यालय में ऐसी प्रवृत्ति द्वारा अलग अलग खेलों का आयोजन करना चाहिए और बच्चों को उसी भावना से शामिल हो सके ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए। ताकि विद्यार्थियों में संघशक्ति, प्रेम, उत्साह भातृभाव, परसम्मान, पराक्रम, वीरता आदि गुणों का विकास हो सके। प्रारंभिक विद्यालयों में बालसंस्कार केन्द्र की जो प्रवृत्तियाँ और विचार है, उसको पाठ्यक्रम में अपनाने से बच्चो में कर्तव्यनिष्ठ, परसम्मान, कृतज्ञता, भाव, प्रेम, समपर्ण, अस्मिता, तेजस्विता आदि उत्तम गुणों का विकास होगा।
- प्रारंभिक विद्यालयों के बच्चों को स्वाध्यायकार्य के बालसंस्कार प्रवृत्ति के कार्यक्रम है, उसमें अनिवार्य रीति से शामिल करना चाहिए। ताकि उनमें उत्तम दृष्टिकोण का विकास हो सके और भावि जीवन को उन्नत बना सके।

भविष्य शोध हेतु सुझाव :-

- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का बच्चो के सृजनात्मक पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य का बच्चों के अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य का बच्चों के मूल्यों के बारे में विकास का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य (आध्यात्मिक प्रवृत्ति) का बच्चों के व्यवहार पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य के बच्चो में व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज, देश, विश्व के बारे में दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य का बच्चों के नैतिक विकास पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- स्वाध्यायकार्य का बच्चों की विचारशक्ति, बुद्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

****